





- Title – अज्ञात
- Accession No – Title –
- Accession No –
- Folio No/ Pages – 19/8-27
- Lines-
- Size
- Substance Paper –
- Script Devanagari देवनागरी
- Language – संस्कृत
- Period –
- Beginning – दिनाशरः साध्यः ।
- End – दशमकः फलमशाद्यः
- Colophon-
- Illustrations -
- Source -
- Subject - ज्योतिष से सम्बन्धित
- Revisor -
- Author -
- Remarks- अपूर्ण



दिनाशरः साध्यः ॥ वक्ष्यमाणप्राक्त्रिभेनवज्ञिता  
 इत्यादिनादृक्कर्मकाः साध्याः ॥ ६ बंदृक्कर्मसं  
 स्कृतेश्चंद्रकार्यः ॥ पर्वोत्तकालीनसूर्यालग्नसंध्यं ॥  
 वक्ष्यमाणग्रहशोभाधिकोत्तप्रागृष्टिकर्मखच  
 रेत्यादिनाचंद्रस्यदिनगतकालः साध्यः ॥ ६ कर्म  
 संस्कृतांतराशुचरंसाध्यं ॥ वक्ष्यमाणजिनाप्तोदा  
 भाइत्यादिनास्यष्टवरंकार्यं ॥ स्यष्टवरादिनादृ  
 साध्यंतच्चंद्रस्यदिनादृभवति ॥ छातदिनादृ  
 चोरंतरानंतरंकार्यं ॥ प्रस्योदाहरणं ॥ चंद्रः २  
 ० ॥ १२ ॥ १ ॥ राहुः ७ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १२ ॥ व्यग्रविधुः ६ ॥ १ ॥  
 ४० ॥ ४ ॥ मृगशिरांराः १ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ शरोदक्षिणः  
 २ ॥ ५ ॥ राशित्रयरहितमंडः ११ ॥ ० ॥ १२ ॥ १ ॥ मृगशिरा  
 तक्रान्तिर्दिक्षिण ४ ॥ ५ ॥ ५२ ॥ मृगशिरादक्षिणः  
 २५ ॥ २६ ॥ ४२ ॥ मृगशिराः संस्कारजातीनतांशदिक्षिणः



2.



अत्र लघ्वस्य त्यागः ॥ तथा कृते जातो राश्यादिः ॥  
 २८ ॥ ५ ॥ १० ॥ दिनगणभवखेटोयं ॥ रवे ध्रुवः ० ॥ १ ॥  
 मर् ॥ ११ ॥ चक्रेण र मृणितः ० ॥ १४ ॥ ३३ ॥ २२ ॥ अने  
 नरहितो दिनगणभवखेटः १ ॥ १४ ॥ ३२ ॥ ४२ ॥ र  
 वेः दोनः १ ॥ १८ ॥ ४१ ॥ ० ॥ अने नष्टको जातः स्त  
 र्गः १ ॥ ४ ॥ १३ ॥ ४२ ॥ अथ चंद्रानयनं ॥ गणः १ ॥ २१  
 चतुर्दश मृणितः २१ ॥ १८ ॥ ४ ॥ दिग्मः २१ ॥ १८ ॥ ४ ॥ अथ  
 सप्तदश भक्तः लघ्वेन १२ ॥ ५२ ॥ ३५ ॥ १७ ॥ चतुर्द  
 श मृणितो हर्ग एते रहितः २० ॥ ४१ ॥ २४ ॥ ४३ ॥ किं  
 विशिष्टः गणः १ ५२ ॥ रवमनुमि १४ ॥ भक्तः लघ्वे  
 न कलादेना १० ॥ ५१ ॥ रहितः २० ॥ ४१ ॥ १३ ॥ ५२ ॥ त  
 तः राश्यादिः कृतः ८ ॥ १ ॥ १३ ॥ ५२ ॥ चंद्रस्य ध्रुवः







त्तः जातं चंदोस्तो ॥ १४ ॥ ५४ ॥ ७३ ॥ प्रथराहोरा  
 नयनं ॥ गणः १५२ ॥ द्विधा १५२ ॥ एकत्र न कुम्भि  
 र्जक्तः तद्ध्वमशादि ॥ ३ ॥ ८ ॥ प्रपरत्र इषुवे  
 दैर्ध्वर्जक्तः तद्ध्वं कलादि ३३ ॥ ४८ ॥ प्रनयोरेकं  
 ८ ॥ ३६ ॥ ५७ ॥ राश्यादिः २ ॥ २ ॥ ३६ ॥ ५७ ॥ प्रयं सु  
 भिः सुद्धो जातो राहुः ८ ॥ ८ ॥ २१ ॥ ३ ॥ राहो ध्रुवः  
 १ ॥ २ ॥ ५ ॥ ० ॥ चर्क शुणितः ८ ॥ ३२ ॥ ४ ॥ ० ॥  
 प्रनैनहानः ० ॥ १६ ॥ ४३ ॥ ३ ॥ नौ न के ए ॥ २ ॥  
 ३८ ॥ ० ॥ सुतो जा तो राहुः १ ॥ १४ ॥ २१ ॥ ३ ॥ प्रथमो  
 मनुष्यकेदसाधनमाह ॥ दिघ्नो द्विधा दिनगण  
 इति ॥ मणः १५२ ॥ दिग्गुणित ५२१ ॥ द्विधा



॥११॥

॥११॥

॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥ ॥२१॥ ॥२२॥ ॥२३॥ ॥२४॥ ॥२५॥ ॥२६॥ ॥२७॥ ॥२८॥ ॥२९॥ ॥३०॥ ॥३१॥ ॥३२॥ ॥३३॥ ॥३४॥ ॥३५॥ ॥३६॥ ॥३७॥ ॥३८॥ ॥३९॥ ॥४०॥ ॥४१॥ ॥४२॥ ॥४३॥ ॥४४॥ ॥४५॥ ॥४६॥ ॥४७॥ ॥४८॥ ॥४९॥ ॥५०॥ ॥५१॥ ॥५२॥ ॥५३॥ ॥५४॥ ॥५५॥ ॥५६॥ ॥५७॥ ॥५८॥ ॥५९॥ ॥६०॥ ॥६१॥ ॥६२॥ ॥६३॥ ॥६४॥ ॥६५॥ ॥६६॥ ॥६७॥ ॥६८॥ ॥६९॥ ॥७०॥ ॥७१॥ ॥७२॥ ॥७३॥ ॥७४॥ ॥७५॥ ॥७६॥ ॥७७॥ ॥७८॥ ॥७९॥ ॥८०॥ ॥८१॥ ॥८२॥ ॥८३॥ ॥८४॥ ॥८५॥ ॥८६॥ ॥८७॥ ॥८८॥ ॥८९॥ ॥९०॥ ॥९१॥ ॥९२॥ ॥९३॥ ॥९४॥ ॥९५॥ ॥९६॥ ॥९७॥ ॥९८॥ ॥९९॥ ॥१००॥



तैः तथैकलादि ४०॥१॥ अनेन कलासुहीनः॥  
 ४०॥२५॥१॥५०॥ राखादिः १॥१५॥१॥५०॥ बुधके  
 द्वधुवः ४॥३॥२॥०॥ चक्रगुणितः २॥२॥३६॥  
 अनेनहीनः ४॥१॥४१॥५०॥ दोषके एतं २८॥  
 ३३॥०॥ यत्तो जातं बुधपाद्युकेदं १॥१॥१४॥५०॥  
 अथ गुरुगुरुकेन्द्रसाधनमाह॥ युविंउ इति॥  
 गणः १५२१ द्वादशभक्तः तथैकलादि १२६॥४५॥  
 गणः सप्तत्मानं तैः तथैकलादि २१॥४३॥ अ  
 नेन कलासुहीनं १२६॥२३॥११॥ राखादिः ४॥६॥  
 २३॥११॥ गुरुचक्रः २६॥१२॥ चक्रगुणितः १॥०॥२४॥  
 अनेनहीनः ४॥५॥५८॥१॥ गुरुदोषकेण १॥२॥१६॥











नमः॥ सोरपदी मोरु तः॥ गुरु राघव दो ग  
 हीतः॥ गुरु राघव दो गुरु॥ क जं ब्रह्म प  
 दो बुध के दं॥ गुरु राघव दो शनिः पंच भाग युक्तो  
 गहीतः॥ शो कं के दं॥ गुरु राघव न च गं ब्रह्म राघव पदो  
 मोः प्रसाध्यत द्योगा र्थ घटत इत्यर्थः॥ इति प्र  
 मुना प्रकारेण साधिता इमे ग्रहा दशा स्ते ल्यता  
 दृग्गते कं पांति॥ एवं ब्रह्म योगं व्यभो ग्रहा णं  
 साधनं कर्तव्यमिति जड कर्म दृष्ट्वा ग्रा यार्थे ता  
 घवा र्थं रं गं पं केत बाहू॥ इह प्रस्मिन् रं गं व्य  
 सिद्धे स्ते ग्रहेः पर्व धर्म नय सत्कार्य दिक्॥ यदि  
 रोत् पर्व ग्रह णं॥ धर्म धर्म क ल्य॥ नमो नातिः

॥१३॥

॥१३॥



स कार्यं शुभं कर्मत्वादि ॥ ६॥ इति श्रीहिना वरदेव  
 आत्मज विष्णुनाथदेव ज्ञानिरजिता ग्रहनाथवस्मम  
 ध्यामाधिभारम्योसुहृतिः समाप्ता ॥ अथरविच  
 द्रस्मवरीकरणपंचांगमयनाजिकीरोव्याख्यायत  
 तत्रतावेदहस्मवरीकरणयभुजज्ञातं पदसंज्ञां सूर्य  
 मंदो भुजज्ञातं ॥ दोरिभो नमिति ॥ त्रिभारराशित्रया  
 दूतं यत्किं द्रग्रहादिवासवदो भुजः स्यात् ॥ त्रिभार  
 राशित्रयादूतं यत्किं पतरनवपथं तंततरसेपदि  
 धविशेषं अतस्त्रितं कार्यं अवशेषं भुजः स्यात् ॥  
 यत्किं नवराशिभ्यो धिकं चेत्तदा चक्रतः द्वादशरा  
 शिभ्यः शेषं भुजः स्यात् ॥ भुजो न भुजो न नितं त्रि  
 भारराशिभ्यो धिकं चेत्तदा चक्रतः द्वादशरा  
 शिभ्यः शेषं भुजः स्यात् ॥ त्रिभिस्त्रिभारराशिभिरे



ॐ कं पदं स्यात् ॥ तद्यथा ॥ अथ मं राशि त्रयं विष्णु पदं स्या  
 व ॥ ततो द्वितीयं समपदं ॥ ततस्तृतीयं विष्णु पदं ॥ चतु  
 र्थं समपदं स्यादित्यर्थः ॥ सूर्य मंदो घ्नं अष्टादशो राः  
 अथ सूर्य मति भागाः ॥ १९ स्युः ॥ राशि द्वयं प्रष्टादश भा  
 गाः ॥ मंदो घ्नं ग्रहे एतद्विंशतं कार्यं तदा खं वृधैः कें  
 दं निगदितं ॥ तद्यथा ॥ यदा मंदो घ्नो द्रुहः शोध्यते तदा  
 मंदं केंद्रं भवति ॥ यदा राशौ घ्नो द्रुहः शोध्यते तदा  
 राशौ केंद्रं भवति ॥ क्रिया दोषादिषु केंद्रं स्व  
 धनं कृतं स्यात् ॥ उलादिषु कृतं एतत् ॥ अथ मित्यर्थः ॥  
 अथ रवे मं केंद्रं भवति ॥ तद्यथा ॥ सूर्य मंदो  
 घ्नं ॥ २० ॥ राशि भागाः ॥ १३ ॥ २१ ॥ रदितं ॥ जातं

॥ १४ ॥

॥ १५ ॥



रवेर्मंदकेदं १॥१३॥४६॥१२॥७२॥७४॥१२॥७४॥१२॥  
 अस्मभागाः कार्यः तद्व्याख्या ॥ राशयसिंशदु ॥ लांम्य  
 धः ॥ यभागा ॥ उक्ता ॥ एवभागाः ॥ स्युः ॥ इतिस्वत्र ॥ तातव्यं ॥  
 तव्याकृतेजातीभागाः ४३॥४५॥१२॥७२॥७४॥१२॥७४॥१२॥  
 एः ४॥५१॥४२॥७२॥७४॥१२॥७४॥१२॥७४॥१२॥७४॥१२॥  
 तरेवचरलवेनेव ४॥५१॥४२॥७२॥७४॥१२॥७४॥१२॥७४॥१२॥  
 दिधा ७३॥३६॥५२॥७२॥७४॥१२॥७४॥१२॥७४॥१२॥७४॥१२॥  
 अनेनरहितानजेवः ५७॥जाताः ४२॥४२॥१५॥  
 अनेनपृथक्स्थानताः सवर्णितेभाज्यभाज  
 यो ॥ भाज्यः २५५०॥१२॥भाजकः १७५७५५॥नजनाप  
 धस्ताद्यंपल १॥३०॥२२॥इदमेवादि केदं १॥५॥७७॥  
 धनरेवेर्मंदफलां अनेनसंस्कृतीरविः १॥५॥७७॥



ल॥  
 ॥१॥ प्रथमं भागानं चरखंडसाधनमाह ॥ मेनादि  
 गइति ॥ सायनभागसूर्ये प्रथमांशसहिते रवौ मेना  
 दिने राशिभागकलादिना प्रथममिति सति यादिना  
 द्विजाभादिना द्विमे अर्धं जाताया द्वादशांगुलशं कोः  
 ॥१५॥ शायसायतनाभनवरे ॥ सायं भात्रिंशस्यान  
 त्रये स्याप्याक्रमेण दशमि १० भुजं गे रदिजिम ॥  
 हतांगुलिताकार्या ॥ अंत्यांगुलौ सिमि ३ रुद्रता  
 नं क्रात्राणि चरखंडानि भवन्ति ॥ प्रथमचरसा  
 धनमाह ॥ स्यादिति ॥ सायनोऽयनांशयुक्तो  
 षडभांशुः सूर्यस्तस्य भुजः तस्य चरदाणि राशय



तत्संख्यानां नरखंडानां योगः कार्यः ॥ कथं ते  
 शः ॥ राशिः ॥ यो धोवर्तमाना लोकाः प्रशाः नो म्ये  
 भोग्य नरखंडेन धातः तस्मात्संख्या गत्यातिः  
 त्रिंशद्भागः तेन युक्तः ॥ धर्माः ॥ चरत्थादः ॥  
 तत्तुल्यं तुल्यं दृष्टं तत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं  
 पदं तत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं  
 ति ॥ तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं  
 चरत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं  
 नाह ॥ देयं तत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं  
 त्रिंशद्भागः तत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं  
 य ॥ तत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं तत्तुल्यं  
 मध्यमं चंद्रं कलासुदेयं ॥ धूमं तत्तुल्यं तत्तुल्यं

ता३



५१६ ॥ र्मस्य मंद फलं भासं सप्त विंशति ॥ भक्तं भासादि  
 दयं फलं मयम मंद स्यात्सा शस्यने सूर्य वदु  
 न लं कार्य ॥ प्रप्य शक इष्टः शान्ति वाह नो र्यः  
 वेदो मध्य नः बल्य म्बुत्वारि शद धिक्  
 ५१६ ॥ षट् शत हीनः ॥ तवः खर स ह तः  
 फलं प्रयत्नां शाः शाताः ॥ ५१६ ॥ मं मलभा ॥ १६ ॥  
 ५१६ ॥ चर खंडा नि ॥ ५१६ ॥ १६ ॥ शकः  
 १५३४ प्रने न ॥ हीनः १०८ ॥ बल्लि ६  
 मक्तः प्रयत्नां शाः १२ ॥ १० ॥ प्रप्य चराने मं  
 रनिः १५ ॥ १० ॥ सामनः १२३ ॥ ५४ ॥ १०







॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥



ताः २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥



१०

॥१८॥

॥१॥ एवेत्वाच्चिरं तवेन गुणिताः २० ॥०॥ एवेस्त्रिके  
 हताः फलं ॥३२॥ इदं म कशदि केन्द्रत्वाद्भातं स  
 मने नहीनामध्यगतिः ५८ ॥१॥ एता तास्य फलं रवि  
 गतिः ५७ ॥३६॥ प्रथमं चन्द्रगतिस्त्यष्टी करणं ॥  
 तत्र चन्द्रमंद केन्द्रं ॥२५॥ १२ ॥१८॥ प्रथमं भुजः २॥  
 ४ ॥४७॥ ४२॥ प्रथमं नरहितं त्रिभं गाता कोटिः ० ॥  
 २५ ॥१२॥ १८ ॥ प्रथमं शाः २५ ॥१२॥ १८ ॥ विंशतिभ  
 कालध्वं फलं ॥१५॥ प्रथमं नरहितं ता रुद्रा ॥१॥ गातं  
 ८ ॥४५॥ एत रवाच्चिरं तवेन गुणिताः १२ ॥१॥ दि  
 गुणिताः २४ ॥२२॥ स्वयेन पदं शेन ४ ॥३॥ युक्तः ॥  
 १८ ॥२५॥ कशदि केन्द्रत्वाद्भातं चन्द्रस्य गतिफलं ध  
 नं ॥ प्रथमं नयुता मध्यगतिः ७८ ॥३५॥ गातास्य फलं

॥१५॥











२३  
 वयस्मनिशेषमाह॥ कथं भूतोत्तराद्विरुद्ध  
 पक्षे भूते मूलदर्शितस्या उत्तराद्विरुद्धः क  
 रणं॥ १॥ प्रमावास्या पूर्वोद्धि पलुष्यदं॥ उत्तराद्वि  
 नागं॥ प्रतियक्ष्म पूर्वोद्धि किं स्लेघं॥ २॥ प्रत्रगत  
 तिथिः १॥ द्विपू॥ ररसप्ततपराशं॥ वोलमा  
 स्यां पूर्वोद्धि जातं भद्राकरं॥ सैकं जातमत्र  
 राद्विबवकरं॥ करणस्यमानं तिथेर्गतौष्य  
 योगाद्वि॥ तिथेर्गतघटिकाः २॥ ३३॥ एष्यघटि  
 काः ५४॥ १॥ १॥ प्रतमो योगः ५४॥ १३॥ १॥ प्रद्वि  
 जातं भद्राकरं एष्यमानं घटिकाद्यं २८॥ रा  
 श्दमेव बवकरं एष्यमानं॥ एता घटिका गताः  
 २॥ ३३॥ रहिताः जाता भद्राकरं एष्यविद्यमानघ



॥२०॥

हिक्ताः २५॥४८॥ प्रथमनक्षत्रानयनं ॥ चंद्रः ६॥१४  
 १५॥३॥ प्रथमकलाः १२२५५५३॥ एववाक्शो  
 ८०॥ कुलाः फला १५ गत नक्षत्राणि ॥ विद्यमान  
 दूनं विशारदा ॥ गतशेषं २५५॥३॥ हरा ८०  
 धो धितं जातमेव ५४४॥५१ गतं वक्षि गुणं  
 १५३०३॥ एवमवक्षि गुणं ३२६८॥ चंद्रगत्याम  
 तं ८१८॥० क्रमात्तद्धागतैश्चाध हिक्ताः प  
 ला निच ॥ गतं १८॥४१॥ एवम ३८॥५५॥ प्रथ  
 योगमाधनं ॥ सूर्यचंद्रयोगः १॥२८॥५१॥४०  
 प्रथमकलाः १४३८॥४०॥ प्रथमतैर्भक्तील  
 ध्वं ११ गतयोगो व्यतिपातः विद्यमानो वराया  
 न ॥ शेषं ७८॥४०॥ हरा ८० पतितं जातमेव २॥२०

२५

॥२०॥



25  
 देधनं ॥ तलादिकेन्द्रे ऋणमिति पूर्वमेवोक्तमस्ति  
 अथ मंदफलसाधनाय नौमादीनां मंदां कानाह  
 खंगोष्चिन इति ॥ खेन्द्रादीणि इति स्पष्टोऽर्थः ॥ १ ॥ अथ  
 मंदकेन्दुसाधनमाह ॥ एतन्मन्त्रस्तु सत्कृतो ग्रहः  
 ॥ प्रथमदिग्गजितेनागमितराशिभ्यः शुद्धः क्रमे  
 ण नौमन्त्राभ्यमंदकेन्दुत्पात् ॥ एतदुक्तमवति  
 ॥ प्रथममन्त्रा रोशमः नौममंदोक्तं ॥ १ ॥ प्रथमः तत्तत्  
 शब्दोऽर्थस्य ॥ षड्गुरोः ॥ १ ॥ प्रथममन्त्रः शुक्रस्य  
 ॥ प्रथोशनेः ॥ एवं स्वस्वमंदोक्ताद्गुरु रोधिते मंदके  
 द्रमवति ॥ १ ॥ अथ नौमादीनां मंदफलसाधनमाह  
 मंदकेन्द्रेति ॥ उदाहरणमेव व्याख्या ॥ १ ॥ प्रथमकृत्त  
 क्रममाह ॥ प्रागिति ॥ प्राक्पूर्वमध्यमे ग्रहे बलक



॥ २२ ॥

तस्य शीघ्रफलस्य दलमर्द्धं यथागतं धनं तं प्रदद्यात्  
तस्माद्दत्त शीघ्रफलाद्वा कुरु न मांदं मंदफलं सध्यं  
तदस्ति तं संपूर्णमध्यमेऽर्द्धं विदधीत कर्मात् ॥ तत्र  
दफलं द्राक्के द्रैकं वा नीत शीघ्रके द्रैकं बिलोमं विपरीतं  
धनं धनं चेद्दणं ऋणं वै धनं तद्वितीयं शीघ्रके  
दं स्यात् ॥ तस्मात्तेशीघ्रफलं साध्यं ॥ तत्सर्वं मंदस्य  
षष्ठे प्राग्बद्ध नष्ट एव विदधीत तस्य षष्ठे गृहो भवेत्  
॥ १२ ॥ प्रभो मस्य षष्ठी के रणं ॥ तत्र शीघ्रोऽं मध्य  
मोर किं १ ॥ ४ ॥ १३ ॥ ४२ ॥ भो मे न ॥ २८ ॥ ५५ ॥ १३ ॥  
रहितो जातं शीघ्रके द्रैकं ३ ॥ ४ ॥ १२ ॥ २८ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥  
८ ॥ १२ ॥ २८ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥  
८ ॥ १२ ॥ २८ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥

॥ २२ ॥



२०॥ १२॥ २६॥ ३३॥ लिखितं ७२॥ १६॥  
 २०॥ इदं यं च दशभक्तं लब्धं १॥ २६॥ १७॥ अनेन  
 २६॥ १७॥ २०॥ यं दशभक्तः लब्धमशाद्य ३३॥ ३८॥  
 ५५॥ २०॥ इति तं मेधादिकेन्द्रं ३३॥ ३८॥  
 ५५॥ २०॥ २०॥ अनेन संस्कृतो भोमः १०॥ १६॥  
 ४४॥ ४०॥ २०॥ अथ मंदकलो नयनं ॥ भोमस्य मंदो ३३॥  
 ४४॥ ४०॥ २०॥ कलाद्रि संस्कृतेन भोमेन रक्षितं ३३॥  
 ४४॥ ४०॥ २०॥ तं मंदकेन्द्रं ५॥ १३॥ १५॥ २०॥ २०॥ अथ भोमं शाः ११॥  
 ४४॥ ४०॥ २०॥ दिनात्ता लब्धं १॥ गतां कः २६॥ दृष्टां कः ५॥  
 ४४॥ ४०॥ २०॥ अनयो रंतरं एतदशो १॥ ४४॥ ४०॥ २०॥ लिखितं ४८॥  
 ५०॥ ४०॥ २०॥ यं च दशभक्तं कलां ३॥ १५॥ २२॥ २०॥ अनेन

24



॥२३॥

तांकोरुषुक्तः३२॥१५॥२२॥दशभक्तःमेवादिक्केद्र  
 लोडातातंनंदफलंभनं३॥१३॥३२॥अनेनसंस्तुतो  
 मध्यमोभौमःजातोमंदस्पष्टः१०॥३॥८॥१५॥  
 प्रपुनःशीघ्रफलानयनं॥तत्रप्रपुनमंशीघ्र  
 केद्रं३॥४॥१८॥२८॥मंदफलंभनं३॥१३॥३२॥  
 केद्रकेपियुक्तोममित्युक्तोभनंमंदफलानयनं  
 हितंशीघ्रकेद्रंजातंद्वितीयशीघ्रफलानयनं  
 शीघ्रकेद्रं३॥१॥४॥५॥प्रस्थांराः८१॥४॥  
 ५॥दिनेभक्ताःफलं६गंतोकाः३२५एषांकाः  
 ३६५॥प्रनयोरंतरेण४०शेषं१॥४॥५॥उत्तितं  
 ४३॥१८॥०॥पंचदशभिर्भक्तंफलं२॥५३॥१२

॥२३॥



अनेन गतां को ३२५ युक्तः ३२५ ॥ ५३ ॥ १२ ॥ दश  
 भक्तः तद्धर्मराक्षसीधूम्रं धनं ३२ ॥ ७ ॥  
 १८ ॥ अनेन युक्तो मंदस्वर्गो ज्ञातः स्वर्गो नामः  
 १॥ ५ ॥ ५६ ॥ ४ ॥ अथ दुधास्य श्रीकरणं ॥  
 तत्रेका गता तीर्तवधशीघ्रकेंद्रं ॥ १ ॥ १७ ॥ १४ ॥  
 ५० ॥ अस्यां शाः ४७ ॥ १४ ॥ ५० ॥ चंदशभिर्भ  
 क्ताः कलं ३ गतां कोः ११ ॥ एष्यां कोः १५ ॥ अथ न  
 मोरं तदेण ३३ शेषं २ ॥ १४ ॥ ५० ॥ गुणितं ७ ॥  
 ८ ॥ ३ ॥ पंचदशभिर्भ १५ भक्तिं कलं ४ ॥ ५६ ॥ अथ  
 अनेन गतां को ११७ युक्तः १२१ ॥ ५६ ॥ ३२ ॥

29



दशभक्तः फलं १२ ॥ ११ ॥ ३८ ॥ अर्द्धितं जालं शी  
 ध्रुफलार्द्धि धनं ६ ॥ ५ ॥ ४८ ॥ मध्यमोरविरेव  
 वृधः १ ॥ २ ॥ १३ ॥ ४२ ॥ फलार्द्धि संस्मृतः ॥ १ ॥ १०  
 १८ ॥ ३१ ॥ अनेन रुद्धितं मंदो ॥ १ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ॥  
 ॥ २४ ॥ तं मंद के दू ५ ॥ १८ ॥ ४० ॥ २८ ॥ अस्य भुजां शा  
 ० ॥ १० ॥ १८ ॥ ३१ ॥ एते पंच दशभिर्भक्तः फल  
 ० ॥ गतांकः ० ॥ एषां भक्तः १२ ॥ अनयो रंतरे ए १२  
 शेषं १ ॥ १८ ॥ ३१ ॥ गुणितं १२३ ॥ ५४ ॥ १२ ॥ पं  
 च दशभिर्भक्तं फलं ८ ॥ १५ ॥ ३६ ॥ अनेन ग  
 तांको ० ॥ पुक्तेः ८ ॥ १५ ॥ ३६ ॥ दशभक्तः फलं ८ ॥  
 धं मां दंधनं ० ॥ ४८ ॥ ३३ ॥ अनेन पुक्ते जातामं

॥ २४ ॥



31



॥२५५॥

स्तोत्रकेंद्रं २॥ २५॥ ५२॥ २५॥ इदं ब्रह्मस्य धिकं ॥  
तोद्वादशभ्यः शोधितं जातं ३॥ ४॥ १॥ ३५॥ ॥ प्रस्यं  
शाः ६४॥ १॥ ३५॥ यंचदशभिर्भक्तैः फलं ६ गतां  
कः १० ६ एष्यां कः १० २ ॥ प्रनयोरंतरे एषु शेषं ४॥  
१॥ ३५॥ गुणितं २॥ ३॥ १० यंचदशभक्तैः फले  
न ० ॥ ३२॥ १२॥ गतां को १० ६ ॥ ग्रामस्याधिकं ॥ २५॥  
द्युक्तं १० ६ ॥ ३२॥ १२॥ दशभक्तैः फलं मंशाद्य  
१० ॥ ३६॥ ॥ ३३॥ अर्द्धितं तुलादिकेन्द्रं ॥ १० ॥  
प्रकलौ ६ ॥ १० ॥ १६॥ ३५॥ ॥ प्रनेन रहितो गुरुः  
४॥ २॥ ५५॥ ४१॥ ॥ अयं मंदोच्चारं ६॥ ०॥ ०॥ ॥ शोधि  
तो जातं मंदकेंद्रं १॥ २॥ ४॥ १६॥ ॥ प्रस्यं ३५॥ १०॥



७॥४॥१८॥दिनेर्मताःफलं३गतां३८  
 एष्यां३८॥४॥१८॥दिनेर्मताःफलं३गतां३८  
 १८॥गुणितं१०८॥३८॥५१॥पंचदशमं  
 फलं१८॥३५॥अनेनगतांको३८॥  
 ४१॥१८॥३५॥दशमंफलं३८॥  
 कादिकेन्द्रसाधनं४॥३१॥२१॥अनेनगतांको३८॥  
 ५१॥१८॥३५॥दशमंफलं३८॥  
 शाघ्रफलान्नयनेशाघ्रकेन्द्रं२॥२५॥५८॥२५॥  
 एतन्मध्येविपरीतमंदफलं३८॥  
 केन्द्रं२॥२१॥२०॥५८॥इदंशुशयधिकजलोद्वाह  
 राभ्यःशोधितंजातं३॥८॥३८॥२॥अस्याशाः८८

33



॥२६॥

३६॥२॥दिनेर्नत्ताःफलं६गतांकोः१०६एषांकोः  
१०८॥प्रनयोऽन्तरेण२२शेषं२॥३६॥२॥गुणितं१७  
९६॥४॥पंचदशभक्तंनध्यं१॥६॥१२॥प्रनेन  
गतांको१०६भक्तः१७॥६॥१२॥दशभक्तः१७॥दि  
केद्रत्नाज्ञातंशीघ्रफलं४॥१०॥४२॥५५॥प्र  
नेनेरहितोभदस्यष्टोऽज्ञातःस्यष्टोऽगुरुः४॥२॥  
६॥४६॥प्रप्यप्रुक्तस्यष्टीकरणं॥तत्रप्रागनी  
तंभक्तस्यशीघ्रं३॥५॥४१॥३५॥प्रस्यांशः  
६५॥४१॥३५॥पंचदशभक्ताःफलं६गतांकोः॥  
३५॥एषांकोः४०२॥प्रनयोऽन्तरेण४२शेषं५॥  
४१॥३५॥गुणितं२॥३॥१६॥पंचदशभक्तंफलं  
१२॥१३॥४॥प्रनेनगतांको३५॥भक्तः३१२॥

॥२६॥



१३॥१॥दशभक्तःफलमंशाद्यं३१॥१३॥१८॥प्रद्वि  
 तंमेष्वादि केन्द्रत्वात्तातंशीघ्रफलार्द्धधनं१८॥३६  
 ३८॥मध्यमोरविःसएवशुक्रः१॥४॥१३॥१२॥  
 फलार्द्धसंस्कृतः१॥२२॥५॥११॥प्रयमंदोष्टात्३  
 १॥१॥१॥रोधितंजातंमंदकेन्द्रं१॥१॥८॥३८॥प्रस्य  
 भेजांशः३१॥८॥३८॥मंददशभक्तोःफलं२गतां  
 कः१॥एष्यांकः१३॥प्रनयो रतरेण२रोमं१॥८॥  
 ३८॥शुणितं१४॥१८॥१८॥मंददशभक्तोःफलं०॥५१  
 ११॥१॥प्रतेनगतांको११॥शुक्रः१॥५१॥११॥दशभ  
 क्तःफलमंशाद्यंमांदमेष्वादि केन्द्रत्वात्तातंधनं  
 १॥११॥११॥प्रतेनसंस्कृतःशुक्रः१॥४॥१३॥१२  
 तातोमंदस्पष्टःशुक्रः१॥५॥२५॥२५॥प्रागानीतंशा

35



॥२॥

ध्रुवैर्द्वं ३॥५॥४१॥३५॥ मंदकतेना ॥११॥४३॥ रहि  
तं जातं शीघ्रकैर्द्वं ३॥४॥२८॥५२॥ अस्यां राः ६४॥  
२८॥५२॥ मंदरशमन्तोः फलं ६ गतांकः ३५॥ एषांकः  
४०२॥ प्रतयो रंतरेण ४२॥ एषांकः २८॥५२॥ गुणितं २१५॥  
५३॥३६॥ मंदरशमन्तोः फलं १४॥२३॥३४॥ अनेन गतां  
को ३५॥ युक्तः ३६२॥२३॥३४॥ दशमत्तः मेवादिक्  
द्वस्वात्तातं राघ्रकृतं धनं ३६॥५०॥२१॥ अनेन युक्तो  
मंदकः जातः स्यः फलः २॥१२॥१५॥४५॥ अथ  
राजिस्पष्टीकरणं ॥ तत्र राघ्रोक्तं मध्यमोरविः १॥४  
१३॥४२॥ राजिना १॥१०॥३६॥४५॥ रहितं जातं शीघ्रकै  
र्द्वं २॥३॥३६॥५७॥ अस्यां राः ६३॥३६॥५७॥ मंदरशम  
न्तोः फलं ४ गतांकः ४८॥ एषांकः ५४॥ प्रतयो रंतरेण  
६२॥ एषांकः ३६॥५७॥ गुणितं २१॥४१॥४२॥ मंदरशम

॥२॥



३४  
 तं फलं १॥२६॥४५॥७५॥नेन गतां को ४८ पुक्तः ४८॥२६॥४५॥  
 दशमक्तः तद्यमं शाद्यं ४॥५५॥४०॥७५॥द्वितं मेष्पादिके ४८  
 त्वा मात रीपू फलं द्विधानं २॥२८॥२०॥७५॥नेन पुक्तः  
 शानिः ११॥३॥५॥५॥७५॥मं देष्पात्तं मोधि तो जातं मं दे  
 केन्द्रं २॥२६॥५४॥५५॥७५॥स्य भुजः २॥२६॥५४॥५५॥७५॥  
 स्याशाः २६॥५४॥५५॥दिनामाः फलं ५४ गतां कोः २८  
 एव्यां कोः ८३० पुनमो रंत रं शाद्यं ११॥५४॥५५॥७५॥  
 शितं ४७॥३८॥४०॥७५॥मं दे दशमक्तं फलं ३॥१०॥३८॥७५॥  
 नेन गतां को २८ पुक्तः ८२॥१०॥३८॥दशमक्तः फलं मं  
 शाद्यं



॥२८॥

॥२८॥







